INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

हरियाणा CET

COMMON ELIGIBILITY TEST

ग्रुप – C एवं ग्रुप - D पदों के लिए

भाग – 4

हिंदी एवं अंग्रेजी

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**हरियाणा CET (Common Eligibility Test)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग (HSSC)**, द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"हरियाणा CET (Common Eligibility Test)"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशक

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online Order करें - https://bit.ly/haryana-cet-notes

WhatsApp करें - https://wa.link/bxnukg

मूल्य : ₹	**संस्करण : नवीनतम**

हिन्दी

1. हिंदी वर्णमाला	1
2. संज्ञा (Noun)	3
3. सर्वनाम	7
4. प्रत्यय	9
5. उपसर्ग	13
6. सन्धि	15
7. समास	21
8. क्रिया	30
9. काल	31
10. वचन	33
11. विशेषण और विशेष्य	35
12. कारक	37
13. वाच्य	38
14. पदबंध	40
15. निपात	41
16. विराम चिह्न	42
17. शब्द रूप लिंग	44
18. पर्यायवाची शब्द (SYNONYMS)	46
19. विलोम शब्द	50
20. अव्यय (अविकारी शब्द)	58

21. मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ 62
22. तद्भव एवं तत्सम, देशज, विदेशज 73
23. अनेकार्थक शब्द 75
24. समरूपी भिन्नार्थक शब्द 77
25. वाक्य-शुद्धि 84
26. वाक्यांशों के स्थान पर एक शब्द 89
27. अलंकार 96
28. अपठित गद्यांश 102
29. कवि (लेखक) एवं उनकी प्रसिद्ध रचनायें 106

English

1. Article 107
2. Noun (संज्ञा) 120
3. Pronoun 130
4. Adjective (विशेषण) 139
5. The Verb 147
6. Adverb 153
7. Preposition 160
8. Conjunction (समुच्चय-बोधक अव्यय) 174
9. Time And Tense 177
10. Spot the Error 188

11. Active / Passive Voice of Verb 192
12. Conversion into Direct & Indirect Narration 199
13. Phrase Replacement / Improvement of Sentences 204
14. Antonyms / synonyms 208
15. Cloze Passage 221
16. Idioms & phrases 223
17. Spelling / Detecting mis_spelt words 228
18. One Word Substitution 231
19. Shuffling of Sentence Parts 239
20. Fill in the blanks 241
21. Homonyms 247
22. Comprehension Passage 250
23. Shuffling of Sentences in a Passage 262

हिंदी

अध्याय – I

हिंदी वर्णमाला

भाषा के दो रूप होते हैं-

1. **मौखिक या उच्चारित भाषा-** मौखिक भाषा की सूक्ष्मतम इकाई ध्वनि होती है। वास्तव में ध्वनि का संबंध सुनने व बोलने से है। यह भाषा उच्चारण पर आधारित होती है। उच्चारण करने के लिए मानव के जो मुख्य-अवयव काम करते हैं वह उच्चारण अवयव कहलाते हैं।
2. **लिखित भाषा-** लिखित भाषा की सूक्ष्मतम इकाई वर्ण होती है। वर्ण का संबंध लिखने व देखने से है। वर्ण ध्वनि रूपी आत्मा का शरीर है।
   लिखित रूप से भाषा की वह छोटी से छोटी इकाई जिसके टुकड़े नहीं किए जा सकते हो वर्ण कहलाते हैं।
   जैसे एक शब्द है - नीला।
   नीला शब्द के यदि टुकड़े किए जाए तो वे होंगे- नी + ला
   अब यदि नी और ला के भी टुकड़े किए जाए तो वे होंगे- न् + ई तथा ल् + आ।
   अब यदि न ई, ल् आ के भी हम टुकडे करना चाहे तो यह संभव नहीं है। अतः ये वर्ण कहलाते हैं।
   ये वर्ण दो ही प्रकार के होते हैं- स्वर तथा व्यंजन
   वर्णों के मेल से शब्द बनते हैं, शब्दों के मेल से वाक्य तथा वाक्यों के मेल से भाषा बनती है। अतः वर्ण ही भाषा का मूल आधार है।
   हिंदी में वर्णों की संख्या 45 है।
   वर्णों को दो भागों में बांटा जाता है
   1. **स्वर** 2. **व्यंजन**

   1. **स्वर** - स्वतंत्र रूप से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ स्वर कहलाती है, अर्थात वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती स्वर कहलाते हैं।
   स्वरों की संख्या 11 - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
   मात्राओं की संख्या 10 - क्योंकि 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती।
   2. **व्यंजन** - वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता होती है, अर्थात स्वरों के सहयोग से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ व्यंजन कहलाती हैं।
   व्यंजनों की संख्या 33 होती है।

विशेष

1. हिंदी निदेशालय 1966 के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।
2. हिंदी की मानक लिपि 'देवनागरी' के अनुसार कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई है।

स्वरों का वर्गीकरण पाँच भागों में बांटा जाता है।

1. **उच्चारण अवधि के आधार पर-**

1. **लघु स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में कम समय लगता है, अर्थात् एक मात्रा का समय लगता है, लघु स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- अ, इ, उ, ऋ
   इन्हें मूल स्वर और ह्रस्व स्वर भी कहते हैं।
2. **दीर्घ स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में लघु स्वरों की तुलना में दोगुना समय लगता है अर्थात दो मात्रा का समय लगता है, दीर्घ स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
   इन्हें सन्धि स्वर भी कहते हैं।

3. **ओष्ठाकृति के आधार पर -**

1. **वृत्ताकार स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत्त के समान गोल हो जाती है, वृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- उ, ऊ, ओ, औ
2. **अवृत्ताकार स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में होठों की आकृति वृत के समान गोल न होकर फैले रहते हैं। अवृत्ताकार स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- अ, आ, इ, ई, ऋ, ए, ऐ

3. **जिह्वा की क्रियाशीलता के आधार पर:-**

1. **अग्र स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का अगला भाग क्रियाशीलता रहता है, अग्र स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- इ, ई, ऋ, ए, ऐ
2. **मध्य स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का मध्य भाग क्रियाशील रहता है, मध्य स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- 'अ'
3. **पश्च स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में जिह्वा का पिछला (पश्च) भाग क्रियाशील रहता है, पश्च स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- आ, उ, ऊ, ओ, औ

4. **मुखाकृति के आधार पर -**

1. **संवृत स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख वृत्त के समान बंद-सा रहता है, अर्थात् सबसे कम खुलता है, संवृत स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- इ, ई, उ, ऊ, ऋ
2. **अर्द्ध संवृत स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख संवृत स्वरों की तुलना में आधा बंद-सा रहता है, अर्द्ध संवृत स्वर कहलाते हैं।
   जैसे- ए, औ

3. **विवृत्त स्वर-** विवृत का अर्थ होता है 'खुला हुआ', वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख्य पूरा खुला रहता है अर्थात सबसे ज्यादा खुला रहता है विवृत स्वर कहलाते हैं ।

   जैसे- 'आ'

4. **अर्द्ध विवृत्त** - वे स्वर जिनके उच्चारण में मुख विवृत स्वरों की तुलना में आधा और अर्द्ध-संवृत स्वरों की तुलना में ज्यादा खुला-सा रहता है, अर्द्ध विवृत स्वर कहलाते हैं। जैसे- अ, ऐ, औ

5. नासिका के आधार पर-

1. **निरनुनासिका स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिका का प्रयोग नहीं किया जाता अर्थात् सिर्फ मुख से उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ, निरनुनासिक कहलाती है।

   जैसे- सभी स्वर

2. **अनुनासिक स्वर-** वे स्वर जिनके उच्चारण में नासिक का प्रयोग किया जाता है, अर्थात मुख के साथ-साथ नासिक से भी उच्चारित होने वाली ध्वनियाँ अनुनासिक। सानुनासिक कहलाती है। **जैसे-** अँ, आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ, ऋँ, एँ, ऐं, ओं, औं

व्यंजनों का वर्गीकरण

1. **उच्चारण प्रयत्न के आधार पर-**

ध्वनियों के उच्चारण में होने वाले यत्न को 'प्रयत्न' कहा जाता है। यह प्रयत्न तीन प्रकार से होते हैं-

1. **स्वरतंत्री में कंपन्न-** स्वरतंत्रियो में होने वाली कंपन्न, नांद या गूंज के आधार पर व्यंजनों के दो भेद किए जाते हैं - सघोष और अघोष

   अघोष वर्ण- जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन नहीं रहता है वे अघोष ध्वनियाँ कहलाती है।
   वर्गीय व्यंजनों के पहले व दूसरे व्यंजन अघोष होते हैं। (क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ तथा ष, श, स)।
   सघोष वर्ण- जिन ध्वनियों के उच्चारण में भारीपन रहता है वे सघोष ध्वनियां कहलाती है।
   वर्गीय व्यंजनों का तीसरा, चौथा और पाँचवां व्यंजन 'सघोष होता है।
   (ग, घ, ड़, ज, झ, ञ, ड़, ढ़, ण, द़, ध, न, ब, भ, म) अन्तः स्थ (य, र, ल, व) तथा ह । सभी स्वर भी घोष वर्ण होते हैं।

2. **श्वास वायु की मात्रा-** उच्चारण में वायु प्रक्षेप या श्वास वायु की मात्रा की दृष्टि से व्यंजनों के दो भेद हैं-

1. अल्पप्राण 2. महाप्राण

1. **अल्पप्राण-** जिनके उच्चारण में श्वास मुख से अल्प मात्रा में निकले और जिनमें 'हकार' जैसी ध्वनि नहीं होती, उन्हें अल्पप्राण ध्वनियाँ कहलाती है। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवा वर्ण अल्पप्राण व्यंजन है।
   जैसे- क, ग, ड़, च, ज, ञ, ट, ड़, ण, त, द़, न, प, ब, म। अन्तस्थ (य, र, ल, व) तथा सभी स्वर भी अल्पप्राण ही है।

2. **महाप्राण-** महाप्राण व्यंजनों के उच्चारण में 'हकार' जैसी ध्वनि विशेष रूप से रहती है और श्वास अधिक मात्रा में निकलती है। प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण तथा समस्त ऊष्म वर्ण महाप्राण होते हैं।

   जैसे- ख, घ, छ, झ, ठ, ढ़, थ, ध, फ, भ और ष, श, स, ह।

3. **मुख अवयवों द्वारा श्वास को रोकने के रूप में-**

ध्वनियों का उच्चारण करते समय हमारी जीव या अन्य मुख्य अवयव अनेक प्रकार से प्रयत्न करते हैं इस आधार पर व्यंजनों को निम्नलिखित विभाजन किया जाता है।
स्पर्शी व्यंजन- ये कंठ, तालु, मूर्धा, दंत और ओष्ठ स्थानों के स्पर्ष से बोले जाते हैं इसलिए इन्हें स्पर्शी व्यंजन कहते हैं।

उदाहरणार्थ-
क वर्ग -क, ख, ग, घ, ड़ (कंठ से)
च वर्ग -च, छ, ज, झ, ञ (तालु से)
ट वर्ग - ट, ठ, ड़, ढ़, ण (मूर्धा से)
त वर्ग - त, थ, द़, ध, न (दन्त से)
प वर्ग - प, फ, ब, भ, म (ओष्ठ से)

नासिक्य- जिन व्यंजनों का उच्चारण करते समय मुख-अवयव वायु को रोकते हैं परंतु वायु पूरी तरह मुख से न निकल कर नाक से भी निकलती है उन्हें नासिक्य व्यंजन कहते हैं। ड़, ञ, ण, न, म नासिक के व्यंजन है

स्पर्ष संघर्षी - जिन व्यंजन के उच्चारण में वायु पहले किसी मुख-अवयव से स्पर्श करती है, फिर रगड़ खाते हुए बाहर निकलती है उन्हें स्पर्शी संघर्षी व्यंजन कहते हैं।
च, छ, ज, झ स्पर्ष संघर्शी व्यंजन है।

संघर्षी - जिन व्यंजनों का उच्चारण एक प्रकार की रगड़ या घर्षण से उत्पन्न ऊष्मा वायु से होता है, उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। यह चार है - ष, श, स, ह । इन्हें ही संघर्षी व्यंजन भी कहते हैं।

उत्क्षिप्त- उत्क्षिप्त शब्द का अर्थ है उछाला हुआ या फेंका हुआ। जिन व्यंजनों के उच्चारण में जीभ का अग्रभाग मूर्धा को स्पर्ष करके झटके से वापस आता है उन्हें उत्क्षिप्त व्यंजन कहते हैं। ड़, ढ़ उत्क्षिप्त व्यंजन हैं।

अतःस्थ - स्वरों और व्यंजनों के मध्य स्थित होने के कारण य, र, ल, व को अंतस्थ व्यंजन कहा जाता है। अंतस्थ व्यंजनों का विभाजन निम्न है-

पार्श्विक - पार्श्विक का अर्थ है-बगल का। जिस ध्वनि के उच्चारण में जिह्वा श्वास वायु के मार्ग में खड़ी हो जाती है और वायु उसके अगल-बगल से निकल जाती है, उसे पार्श्विक व्यंजन कहते हैं। 'ल' पार्श्विक व्यंजन है।

प्रकंपित - प्रकंपित का अर्थ है कांपता हुआ। जिस व्यंजन के उच्चारण में जिह्वा की नोक वायु से रगड़ खाकर कांपती

रहती है उसे प्रकंपित व्यंजन कहते हैं। 'र' प्रकंपित व्यंजन है।

लुण्ठित - 'र' को लुण्ठित व्यंजन कहते हैं क्योंकि 'र' के उच्चारण में जिह्वा लुढ़ककर स्पर्ष करती है।

अर्द्ध स्वर - हिंदी में य, व ऐसी ध्वनियाँ हैं जो न तो पूर्ण रूप से स्वर हैं, ना पूर्णरूपेण व्यंजन हैं। इनके उच्चारण में श्वास वायु को रोकने के लिए उच्चारण अवयव प्रयत्न तो करते हैं, लेकिन वह प्रयत्न न के बराबर होता है। अतः यह ध्वनियाँ लगभग अवरोध रहित निकल जाती है।

संयुक्त व्यंजन - हिंदी वर्णमाला में कुल ५ संयुक्त व्यंजन हैं।

क्ष (क्+ष)　　त्र (त्+र)　　ज्ञ (ज्+ञ)
श्र का सन्धि विच्छेद (श+र)

2. प्रयत्न स्थान के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण

1. कठ्य व्यंजन - क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, ह्
कठ्य व्यंजन तथा इनका उच्चारण स्थान कंठ है। ह और विसर्ग कंठ के थोड़ा नीचे काकल से बोली जाती है, इसलिए इन्हें काकल्य ध्वनि कहा जाता है।

2. तालव्य व्यंजन - च्, छ्, ज्, झ्, ञ, स्
ष् तालव्य व्यंजन है, इनका उच्चारण तालु के माध्यम से होता है। इनके उच्चारण में जीभ का अगला भाग ऊपर उठकर दांतों के मसूड़ों से ऊपर तालु को स्पर्ष करता है।

3. **मूर्धन्य व्यंजन** - ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, ड़्, ढ़्, र् मूर्धन्य व्यंजन हैं तथा इनका उच्चारण जीभ के अग्रभाग द्वारा मूर्धा (तालु का बीच उपर वाला ऊपर का कठोर भाग) को स्पर्ष करने से होता है।

4. **दंत्य व्यंजन** - त्, थ्, द्, ध् दंत्य व्यंजन हैं जो जीभ की ऊपर की नोक द्वारा ऊपर के दांतो को स्पर्श करने से उच्चारित होते हैं।

5. **वत्स्य व्यंजन** - न्, न्ह, ल्, स्, ज व्यंजन वत्स्य हैं। वत्स्य का अर्थ है मसूड़ा अतः ऊपर के दांतो से थोड़ा ऊपर मसूड़ों के साथ जीभ के स्पर्श से यह व्यंजन बोले जाते हैं। पारंपरिक रूप से न् एवं स् को दंत्य कहा जाता है, किंतु इनका वास्तविक उच्चारण स्थान दांतो से ऊपर है इसलिए इन्हें वत्स्य में सम्मिलित किया गया है।

6. ओष्ठ्य व्यंजन - प्, फ, ब्, भ् म्, व्, म्ह
दोनों ओठों को मिलाने पर बोले जाते हैं इसलिए इन्हें ओष्ठ्य कहा जाता है।

7. **दंतोष्ठ्य** - फ, व व्यंजन ऊपर के दांत एवं नीचे के होंठ को मिलाने से उच्चारित होते हैं। इसलिए इन्हें दंतोष्ठ्य व्यंजन कहा जाता है।

अध्याय – 2

संज्ञा (Noun)

संज्ञा (Noun) की परिभाषाः-

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं, जिससे किसी विशेष वस्तु, भाव और जीव के नाम का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं

दूसरे शब्दों में- किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, गुण या भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं ।

जैसे – प्राणियों के नाम- मोर, घोड़ा, अनिल, किरण जवाहरलाल नेहरू आदि ।

वस्तुओं के नाम- अनार ,रेडियों , किताब, संदूक, आदि ।

स्थानों के नाम- कुतुबमीनार , नगर, भारत, मेरठ आदि

भावों के नाम- वीरता , बुढ़ापा, मिठास आदि

यहाँ 'वस्तु ' शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में हुआ है, जो केवल वाणी और प्रदार्थ का वाचक नहीं ,वरन उनके धर्मों का भी सूचक है।

साधारण अर्थ में 'वस्तु ' का प्रयोग इस अर्थ में नही होता। अतः वस्तु के अंतर्गत प्राणी, प्रदार्थ और धर्म आते हैं। इन्हीं के आधार पर संज्ञा के भेद किये गये हैं।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के पाँच भेद होते हैं-

(1) व्यक्तिवाचक (Proper noun)
(2) जातिवाचक (Common noun)
(3) भाववाचक (Abstract noun)
(4) समूहवाचक (Collective noun)
(5) द्रव्यवाचक (Material noun

(1)व्यक्तिवाचक संज्ञा :-जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे-

व्यक्ति का नाम-रवीना , सोनियां गाँधी , श्याम, हरि, सुरेश, सचिन आदि ।

वस्तु का नाम- कर , टाटा चाय, कुरान , गीता ,रामायण आदि ।

स्थान का नाम-ताजमहल, कुतुबमीनार , जयपुर आदि ।

दिशाओं के नाम- उत्तर , पश्चिम , दक्षिण , पूर्व ।

देशों के नाम- भारत , जापान , अमेरिका, पाकिस्तान , बर्मा ।

राष्ट्रीय जातियों के नाम- भारतीय , रूसी, अमेरिकी।

समुन्द्रों के नाम- काला सागर , भूमध्य सागर , हिन्द महासागर , प्रशान्त महासागर।

नदियों के नाम- गंगा, ब्रह्मपुत्र, बोल्गा, कृष्णा कावेरी , सिन्धु ।

पर्वतों के नाम- हिमालय, विन्ध्याचल, अलकनंदा, कराकोरम ।

नगरों चौकों और सड़कों के नाम वाराणसी , गया,चाँदनी चौक, हरिसन रोड़, अशोक मार्ग ।

पुस्तकों तथा समाचारों के नाम- रामचरित मानस, ऋग्वेद, धर्मयुग, इण्डियन नेशन, आर्यावर्त ।

ऐतिहासिक युद्धों और घटनाओं के नाम- पानीपत की पहली लड़ाई, सिपाही -विद्रोह, अक्तूबर –क्रांति ।

दिनों महीनों के नाम- मई, अक्टूबर ,जुलाई, सोमवार , मंगलवार ।

त्योहारों उत्सवों के नाम- होली, दीवाली, रक्षाबन्धन, विजयादशमी ।

(2) **जातिवाचक संज्ञा** :- जिस शब्द से एक जाति के सभी प्राणियों अथवा वस्तुओं का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

बच्चा , जानवर , नदी, अध्यापक, बाजार , गली, पहाड़, खिड़की, स्कूटर आदि शब्द एक ही प्रकार प्राणी, वस्तु और स्थान का बोध करा रहे हैं। इसलिए ये जातिवाचक संज्ञा' हैं।

जैसे - लड़का, पशु-पक्षियों वस्तु , नदी , मनुष्य, पहाड़ आदि।

'लड़का' से राजेश, सतीश, दिनेश आदि सभी 'लड़कों का बोध होता हैं।

'पशु-पक्षियों से गाय, घोड़ा, कुत्ता आदि सभी जाति का बोध होता हैं।

'वस्तु' से मकान, कुर्सी, पुस्तक, कलम आदि का बोध होता हैं।

'नदी' से गंगा यमुना, कावेरी आदि सभी नदियों का बोध होता हैं।

'मनुष्य' कहने से संसार की मनुष्य-जाति का बोध होता हैं।

'पहाड़' कहने से संसार के सभी पहाड़ों का बोध होता हैं।

(3) भाववाचक संज्ञाः-

थकान, मिठास, बुढ़ापा, गरीबी , आजादी , हँसी , चढ़ाई, साहस,

वीरता आदि शब्द-भाव, गुण, अवस्था तथा क्रिया के व्यापार का बोध करा रहें हैं।

इसलिए ये 'भाववाचक संज्ञाएँ हैं।

इस प्रकार-जिन शब्दों से किसी प्राणी या पदार्थ के गुण, भाव, स्वभाव या अवस्था का बोध होता हैं, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

जैसे- उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि । इन उदाहरणों में 'उत्साह' से मन का भाव हैं। 'ईमानदारी' से गुण का बोध होता हैं। 'बचपन' जीवन की एक अवस्था या दशा को बताता हैं। अतः उत्साह, ईमानदारी, बचपन, आदि शब्द भाववाचक संज्ञाए हैं। हर प्रदार्थ का धर्म होता हैं। पानी में शीतलता, आग में गर्मी, मनुष्य में देवत्व और पशुत्व इत्यादि का होना आवश्यक हैं। पदार्थ का गुण या धर्म प्रदार्थ से अलग नही रह सकता। घोड़ा हैं, तो उसमें बल है, वेग है और आकार भी है। व्यक्तिवाचक संज्ञा की तरह भाववाचक संज्ञा से भी किसी एक ही भाव का बोध होता हैं। 'धर्म, गुण, अर्थ और 'भाव' प्रायः पर्यायवाची शब्द हैं। इस संज्ञा का अनुभव हमारी इन्द्रियों को होता हैं और प्रायः इसका बहुवचन नहीं होता।

भाववाचक संज्ञाएँ बनानाः-

भाववाचक संज्ञाओं का निर्माण जातिवाचक संज्ञा, विशेषण, क्रिया, सर्वनाम और अव्यय शब्दों से बनती हैं। भाववाचक संज्ञा बनाते समय शब्दों के अंत में प्रायः पन, त्व, ता आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता हैं।

(1) जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनानाः-

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
स्त्री-	स्त्रीत्व	भाई-	भाईचारा

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
मनुष्य-	मनुष्यता	पुरुष-	पुरुषत्व, पौरुष
शास्त्र-	शास्त्रीयता	जाति-	जातीयता
पशु-	पशुता	बच्चा-	बचपन
दनुज-	दनुजता	नारी-	नारीत्व
पात्र-	पात्रता-	बूढा-	बुढ़ापा
लड़का-	लड़कपन	मित्र-	मित्रता
दास-	दासत्व	पण्डित-	पण्डिताई
अध्यापक-	अध्यापन	सेवक-	सेवा

(2) **विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनानाः-**

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा
लघु-	लघुता, लघुत्व, लाघव	वीर-	वीरता, वीरत्व
एक-	एकता, एकत्व	चालाक-	चालाकी
खट्टा-	खटाई	गरीब	गरीबी
गंवार	गंवारपन	पागल	पागलपन
बूढा	बुढ़ापा	मोटा	मोटापा
नबाव	नबाबी	दीन	दीनता,दैन्य
बड़ा	बड़ाई	सुंदर	सौंदर्य, सुंदरता
भला	भलाई	बुरा	बुराई
ढीठ	ढिठाई	चौड़ा	चौड़ाई
लाल	सरलता सारल्य	आवश्यकता	आवश्यकता
परिश्रमी	परिश्रम	अच्छा	अच्छाई

अध्याय – 7

समास

⇒ **समास का शाब्दिक अर्थ** - जोड़ना या मिलाना। अर्थात समास प्रक्रिया में दो या दो से अधिक शब्दों को आपस में मिलाकर एक शब्द बनाया जाता है!

⇒ दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुए नए सार्थक शब्द को समास कहते है।

⇒ **समस्त पद (सामासिक पद)** - समास के नियमों का पालन करते हुए जो शब्द बनता है उसे समास पद या सामासिक,पद कहते हैं।

⇒ समस्त पद के सभी पदों को अलग अलग किए जाने की प्रक्रिया को समास विग्रह कहलाती है।

⇒ समास वह शब्द रचना है जिसमें अर्थ की दृष्टि से परस्पर स्वतंत्र सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द मिलकर किसी अन्य स्वतंत्र शब्द की रचना करते है।

सामासिक शब्द में आए दो पदों में पहले पद को पूर्वपद तथा दूसरे पद को उत्तरपद कहते हैं। ।

जैसे:-

गंगाजल	गंगाजल	- गंगा का जल
(पूर्वपद)	(उत्तरपद)	(समस्त पद) (समास विग्रह)

कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रस्तुत कर देना ही समास का प्रमुख उद्देश्य होता है।

समास के प्रकार

- 1. अव्ययीभाव समास
- 2. तत्पुरुष समास
  - 1. कर्म तत्पुरुष (द्वितीय तत्पुरुष) (को)
  - 2. करण तत्पुरुष (तृतीय पुरुष को) (से के द्वारा)
  - 3. संप्रदान तत्पुरुष (चतुर्थी तत्पुरुष) (के लिए)
  - 4. अपादान तत्पुरुष (पंचमी तत्पुरुष) (से अलग होने के अर्थ से)
  - 5. सम्बन्ध तत्पुरुष (षष्ठी तत्पुरुष (का, की, के)
  - 6. अधिकरण तत्पुरुष (सप्तमी तत्पुरुष) (में, पर)
- 3. कर्मधारय समास
- 4. द्विगुसमास
- 5. द्वंद्वसमास
- 6. बहुव्रीहि समास

पद की प्रधानता के आधार पर समास का वर्गीकरण

(क) पूर्वपद प्रधान –अव्ययीभाव

(ख) उत्तर पद प्रधान - तत्पुरुष, कर्मधारय और द्विगु

(ग) दोनों पद प्रधान-द्वन्द्व

(घ) दोनों पद अप्रधान - बहुव्रीहि (इसमें कोई तीसरा अर्थ प्रधान होता है)

नोट:

भारतीय भाषा में कुछ ऐसे शब्द है जिनके रुप में लिंग, वचन के अनुसार परिवर्तन या विकार उत्पन्न नहीं होता है, उन्हें अव्यय शब्द या अविकारी शब्द कहते हैं।

अर्थात ऐसे शब्द जिनका व्यय ना हो, उन्हे अव्यय शब्द कहते हैं।

जैसे – यथा, तथा, यदा, कदा, आ, प्रति , जब, तब, भर, यावत , हर आदि।

(I) अव्ययीभाव समास Adverbial Compound

जिस समास में पहला पद अर्थात पूर्वपद प्रधान तथा अव्यय होता है, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

पहचान- सामासिक पद (समस्त पद) मे यथा, आ, अनु, प्रति, भर, तथा, यदा, कदा, जब, तब, यावत, हर आदि शब्द आते हैं।

समस्त पद	-	विग्रह
आजन्म	-	जन्म से लेकर
आमरण	-	मरने तक
आसेतु	-	सेतु तक
आजीवन	-	जीवन भर
अनपढ़	-	बिना पढ़ा
आसमुद्र	-	समुद्र तक

अनुरुप	-	रुपके योग्य
अपादमस्तक	-	पाद से मस्तक तक
यथासंभव	-	जैसा सम्भव हो / जितना सम्भव हो सके
मीठा – मीठा	-	बहुत मीठा
चुप्पे –चुप्पे	-	बिल्कुल चुपचाप
आगे- आगे	-	बिल्कुल आगे
गली – गली	-	प्रत्येक गली
दूर - दूर	-	बिल्कुल दूर
सुबह - सुबह	-	बिल्कुल सुबह
एकाएक	-	एक के बाद एक
दिनभर	-	पूरे दिन
दो – दो	-	दोनों दो। प्रत्येक दोनों
रोम- रोम	-	पूरे रोम मे
नए – नए	-	बिल्कुल नए
हरे - हरे	-	बिल्कुल हरे
बारी – बारी	-	एक एक करके / प्रत्येक करके
बे – मारे	-	बिना मारे
जगह – जगह	-	प्रत्येक जगह
मील – भर	-	पूरे मील
गरमागरम	-	बहुत गरम
पतली-पतली	-	बहुत पतली
हफ्ता भर	-	पूरे हफ्ते
प्रति एक	-	प्रत्येक
एक - एक	-	हर एक / प्रत्येक
धीरे – धीरे	-	बहुत धीरे
कोना-कोना	-	सारा कोना
मात्र	-	केवल एक
भरा-भरा	-	बहुत भरा
शुरू – शुरू	-	बहुत आरंभ/शुरु में
अंग- अंग	-	प्रत्येक अंग
अहैतुक	-	बिना किसी कारण के
प्रतिवर्ष	-	वर्ष – वर्ष / हर वर्ष
प्रत्यक्ष	-	आँख के सामने
बेफायदा	-	फायदे के बिना
बाकायदा	-	कायदे के अनुसार
बेखटके	-	बिना खटके के
निड़र	-	ड़र के बिना
यथाशीघ्र	-	जितना शीघ्र हो
प्रतिध्वनि	-	ध्वनि की ध्वनि

(2) <u>तत्पुरुष समास Determinative compound -</u>

जिस समास मे बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता है तथा दोनों पदो वे बीच का कारक- चिन्ह लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते है। तत्पुरुष समास छः प्रकार के होते हैं, जो निम्नलिखित हैं-

[I]कर्मतत्पुरुष समास (द्वितीय तत्पुरुष):- जिस तत्पुरुष समास में कर्मकारक की विभक्ति लुप्त हो जाती हैं, वहाँ कर्मतत्पुरुष समास है। जैसे –

समस्त पद	-	**विग्रह**
गगनचुम्बी	-	गगन को चूमने वाला
यश प्राप्त	-	यश को प्राप्त
चिड़ीमार	-	चिड़ियों को मारने वाला
ग्रामगत	-	ग्राम को गया हुआ
रथचालक	-	रथ को चलाने वाला
जेबकतरा	-	जेब को काटने वाला
जनप्रिया	-	जन को प्रिय
स्वर्गीय	-	स्वर्ग को गया
वनगमन	-	वन को गमन
सर्वप्रिय	-	सब को प्रिय
गिरहकट	-	गिरह को काटने वाला गिरह / गांठ
हस्तगत	-	हस्त को गया हुआ
प्राप्तोदक	-	उदक (जल) को प्राप्त तक
तिलकुटा	-	तिल को कूटकर बनाया हुआ
जगसुहाता	-	जग को सुहाने वाला
कृष्णार्पण	-	कृष्ण को अर्पण

[II] <u>करण तत्पुरुष समास (तृतीय तत्पुरुष)</u>:- जिस तत्पुरुष समास मे करणकारक की विभक्ति 'से', 'के द्वारा' लुप्त हो जाती है, वहाँ करण तत्पुरुष समास है।

समस्त पद	-	**विग्रह**
करुणापूर्ण	-	करुणा से पूर्ण
भयाकुल	-	भय से आकुल
रेखांकित	-	रेखा से अंकित
शोकग्रस्त	-	शोक से ग्रस्त
मदान्ध	-	मद से अन्धा
मनचाहा	-	मन से चाहा
पददलित	-	पद से दलित
प्रशिक्षण	-	विशेष प्रशिक्षण (विशेष द्वारा शिक्षण)
कष्टसाध्य	-	कष्ट से साध्य
मदमाता	-	मद (मस्त) से माता (भरा)
प्रेमातुर	-	प्रेम से आतुर
भुखमरा	-	भूख से मरा हुआ
रोगग्रस्त	-	रोग से ग्रस्त
हस्ताक्षरित	-	हस्त द्वारा अक्षरित
शोकातुर	-	शोक से आतुर

मनगढ़ंत	-	मन से गढ़ी हुई
वाक युद्ध	-	वाक से युद्ध
सुख युक्त	-	सुख से युक्त
मदशुन्य	-	मद से शून्य
दुखसंतप्त	-	दुःख से संतप्त
मनमौजी	-	मन से मौजी
भयभीत	-	भय से भीत
आनन्द उत्सव	-	आनन्द से भरा उत्सव
गुरुदत्त	-	गुरु द्वारा दत्त
तैलोक्त	-	तेल से युक्त
अनुराग अंचल	-	अनुराग से भरा अंचल

नोट -स्वयंवर शब्द में 'के' कारक चिह्न से विभक्ति नहीं निकालेंगे, क्योंकि यहाँ 'के' सम्बन्ध नही दर्शाता है। यहाँ 'द्वारा' शब्द अथवा कारक चिह्न से विभक्ति निकालेंगे।

समस्त पद	-	**विग्रह**
स्वयंवर	-	स्वयं के द्वारा वर चुनना
आशाभरी	-	आशा से भरी
दिग्भ्रमित	-	दिक से भ्रमित
व्यंग्य मुस्कान	-	व्यंग्य से युक्त मुस्कान
दर्द भरा	-	दर्द से भरा
यूथ भ्रष्ट	-	यूथ (झुंड़) से भ्रष्ट
आत्मनिवेदन	-	आत्मा से निवेदन
आनन्दनृत्य	-	आनन्द से भरा नृत्य
लापरवाही भरी	-	लापरवाही से भरी
सनक भरी	-	सनक से भरी

[III] संप्रदान तत्पुरुष समास (चतुर्थ तत्पुरुष):-

जिस पर संप्रदान कारक की विभक्ति 'के लिए'लुप्त हो जाती है, वहाँ संप्रदान तत्पुरुष समास है। जैसे

समस्त पद	-	**विग्रह**
प्रयोगशाला	-	प्रयोग के लिए शाला
स्नानघर	-	स्नान के लिए घर
यज्ञशाला	-	यज्ञ के लिए शाला
गौशाला	-	गौ के लिए शाला
देशभक्ति	-	देश के लिए भक्ति
डाकगाड़ी	-	डाक के लिए गाड़ी
परीक्षा भवन	-	परीक्षा के लिए भवन
हथकड़ी	-	हाथ के लिए कड़ी
कृष्णार्पण	-	कृष्ण के लिए अर्पण
हवन सामग्री	-	हवन के लिए सामग्री
सभा भवन	-	सभा के लिए भवन
युद्धभूमि	-	युद्ध के लिए भूमि
गुरुदक्षिणा	-	गुरु के लिए दक्षिणा
रासलीला	-	रास के लिए लीला
छात्रावास	-	छात्रों के लिए आवास
आनन्दभवन	-	आनन्द के लिए भवन
जेबखर्च	-	जेब के लिए खर्च
विद्यापीठ	-	विद्या के लिए पीठ
शान्तिनिकेतन	-	शान्ति के लिए निकेतन
प्रचारगाड़ी	-	प्रचार के लिए गाड़ी
अतिथिशाला	-	अतिथि के लिए शाला
मृत्युदंड़	-	मृत्यु के लिए दिया जाने वाला दंड़
विश्रामस्थल	-	विश्राम के लिए स्थल
बलि - पशु	-	बलि के लिए पशु

[IV]अपादान तत्पुरुष समास (पंचमी तत्पुरुष):- जिस तत्पुरुष समास में अपादान कारक की विभक्ति 'से' (अलग होने के भाव में) लुप्त हो जाती है, वहाँ अपादान तत्पुरुष समास है जैसे –

नोट:-

हीन, मुक्त शब्द अलग होने के अर्थ में प्रयोग होते हैं।

समस्त पद	-	**विग्रह**
धनहीन	-	धन से हीन
गुणहीन	-	गुण से हीन
जलहीन	-	जल से हीन
आवरणहीन	-	आवरण से हीन
कर्महीन	-	कर्म से हीन
नेत्रहीन	-	नेत्र से हीन
वाक्यहीन	-	वाक्य से हीन
भाषाहीन	-	भाषा से हीन
संगीहीन	-	संगी से हीन
पथभ्रष्ट	-	पथ से भ्रष्ट (भ्रष्ट-बिगड़ा हुआ, नीचे गिरा हुआ)
पदच्युत	-	पद से च्युत
देशनिकाला	-	देश से निकाला
ऋणमुक्त	-	ऋण से मुक्त
धर्मविरत	-	धर्म से विरत (विरत – जिसने हाथ खींच लिया हो)
त्रुटिहीन	-	त्रुटि से हीन
वीरविहीन	-	वीर से हीन

[v] संबंध तत्पुरुष समास (षष्ठी तत्पुरुष) :- जिस तत्पुरुष समास मे संबंध कारक की विभक्ति 'का', 'की', 'के' लुप्त हो जाती है, वहाँ संबंध तत्पुरुष समास है।

जैसे :-

समस्त पद	-	**विग्रह**
राजपुत्र	-	राजा का पुत्र
राजाज्ञा	-	राजा की आज्ञा
पराधीन	-	पर के अधीन
राजकुमार	-	राजा का कुमार

कन्यारत्न (कन्या + रत्न	-	रत्न जैसी कन्या
मृगनयनी	-	मृग जैसे नयन
चंद्रमुखी	-	चंद्र के समान मुख
चरण कमल	-	कमल के समान चरण
नयनबाण	-	नयन रूपी बाण
प्राण प्रिय	-	प्राणों के समान प्रिय

मध्यलोपी कर्मधारय समासः-

पूर्वपद तथा उत्तर पद में सम्बन्ध बताने वाले पद का लोप हो जाता है।

समस्त पद	-	**विग्रह**
पनचक्की	-	पानी से चलने वाली चक्की
रेलगाड़ी	-	रेल (पटरी) पर चलने वाली गाड़ी
दहीबड़ा	-	दही में डूबा हुआ बड़ा
वनमानुष	-	वन मे निवास करने वाला मानुष
गुरुभाई	-	गुरु के सम्बन्ध मे भाई
मधुमक्खी	-	मधु का संचय करने वाली मक्खी
मालगाड़ी	-	माल ले जाने वाली गाडी
मृत्युदंड़	-	मृत्यु के लिए दिए जाने वाला दंड़
पर्णकुटी	-	पर्णों से बनी कुटी
धृतअन्न	-	धृत से युक्त अन्न

कर्मधारय समास के अन्य उदाहरणः-

समस्त पद	-	**विग्रह**
रक्तलोचन	-	रक्त (लाल) है जो लोचन (आँख)
महासागर	-	महान है जो सागर
चरमसीमा	-	चरम तक पहुँची है जो सीमा
कुमारगंधर्व	-	कुमार है जो गन्धर्व
मंदबुद्धि	-	मंद है जिसकी बुद्धि
कुमति	-	कुत्सित है जो मति
कुपुत्र	-	कुत्सित है जो पुत्र
दुष्कर्म	-	दूषित है जो कर्म
कृष्ण- पक्ष	-	कृष्ण (काला) है जो पक्ष
राजर्षि	-	जो राजा भी है और ऋषि भी
नरसिंह	-	जो नर भी है और सिंह भी
चरणारविन्द	-	चरणरूपी अरविन्द (कमला)/ ऐसा चरण जो कमल के समान हो
पदारविन्द	-	ऐसा पद जो अरविन्द में (कमल के) समान हो
कनकलता	-	कनक की सी लता
आशालता	-	आशारूपी लता
कापुरुष	-	कायर पुरुष
कुसुमकोमल	-	कुसुम के समान कोमल
कपोतग्रीवा	-	कपोत (कबूतर) के समान ग्रीवा (गर्दन)
चन्द्रबदन	-	चन्द्रमा के समान बदन
तिलपापड़ी	-	तिल के समान पापड़ी
परमेश्वर	-	परम है जो ईश्वर
लौहपुरुष	-	लौह के समान पुरुष
भवसागर	-	भव रूपी सागर
समभावी	-	समान भावना रखने वाला
महाशय	-	महान है जो शय
सर्वव्यापक	-	सब जगह व्याप्त है जो
स्नेह रस	-	स्नेह से भरा रस
स्नेह दाता	-	स्नेह देता है जो
भलेमानस	-	भला है जो मानस
स्वयं सेवक	-	स्वयं सेवा करता है जो
मोमबत्ती	-	मोम से बनी है बत्ती
गोलघर	-	गोल है जो घर
स्वगतोक्ति	-	स्वगत है जो उक्ति
कीचड़ पानी	-	कीचड़ से युक्त पानी
कम उम्र	-	कम है जो उम्र
आजाद ख्याल	-	स्वतन्त्र है जो ख्याल

(५) द्विगु समास (Numeral compound):-

जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है तथा पूर्वपद संख्यावाची शब्द होता है, वहीं द्विगु या द्विगु समास होता है।

- अर्थ की दृष्टि से द्विगु समास से किसी समूह या समाहार का बोध होता है अर्थात् यह समास समूहवाची या समाहारवाची होता है।

समस्त पद	-	**विग्रह**
सप्तसिन्धु	-	सात सिन्धुओं का समूह
दोपहर	-	दो पहरों का समूह
त्रिलोक	-	तीनों लोकों का समाहार/तीन लोक
चौराहा	-	चार राहों का समूह/ चार राहों का समाहार
नवरात्र	-	नौ रात्रियों का समूह
सप्तऋषि / सप्तर्षि	-	सात ऋषियों का समूह
पंचमढी	-	पाँच मढ़ियों का समूह
सप्ताह	-	सात दिनों का समूह
त्रिकोण	-	तीनों कोणों का समाहार
तिरंगा	-	तीन रंगों का समूह
अठन्नी	-	आठ आनों का समाहार
चवन्नी	-	चार आने का समाहार
चौपाया	-	चार पांव वाला

चौमासा	-	चौ (चार) मासों का समूह
पंचतंत्र	-	पाँच तन्त्रों का समूह
त्रिवेणी	-	तीनों वेणियों का समूह
चतुष्पद	-	चार पादों का समूह
नवग्रह	-	नौ ग्रहों का समूह
चतुर्दिक	-	चार दिशाओ का समूह
त्रिफला	-	तीन फलों का समूह
त्रिभुवन	-	तीन भवनों का समूह

नोट- प्रायः द्विगु समास के समस्त पद एकवचन की तरह प्रयोग में लाये जाते हैं। जैसेः-

1. षट् रस का आनन्द लेना (शुद्ध) – षट् रसों का आनन्द लेना (अशुद्ध)
2. मैंने पंचतन्त्र (ग्रन्थ) पढा (शुद्ध) - मैंने पंचतन्त्र पढे। (अशुद्ध)
3. शताब्दी (न कि सौ वर्ष)
4. त्रिकोण (तीन कोण वाला एक आकार, न कि तीन कोण)
5. शतदल (सौ या अधिक दलों वाला कमल पुष्प, न कि सौ दल)

आदि शब्द एकवचन संज्ञा के रूप में प्रयोग में आते हैं।

कर्मधारय समास और द्विगु समास में अन्तरः-

द्विगु समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण होता है, जो दूसरे पद की गिनती बताता है, जबकि, कर्मधारय समास का एक पद विशेषण होने पर भी संख्यावाचक कभी नही होता है। जैसेः- नवरत्न - नौ रत्नों का समूह (द्विगु समास)

चतुर्वर्ण- चार वर्णों का समूह (द्विगु समास)

पुरुषोत्तम- पुरुषों में जो है उत्तम (कर्मधारय समास)

रक्तोत्पल - रक्त (लाल) है जो उत्पल (कमल) (कर्मधारय समास)

(5) द्वन्द्व (द्वन्द) समास (Copulative Compound):-

जिस समास में दोनों पद प्रधान हो तथा विग्रह करने पर 'और',अथवा , 'या', 'एवं' लगता हो, वहाँ द्वन्द्व समास होते हैं ।

पहचान- दोनों पदों के बीच प्रायः योजक चिन्ह (Hyphen) (-) का प्रयोग होता है। इस समास में एक जैसे दो शब्द आएँगे जैसेः- संज्ञा – संज्ञा, क्रिया -क्रिया, विशेषण - विशेषण आदि।

समस्त पद	-	**विग्रह**
नदी – नाले	-	नदी और नाले
पाप - पुण्य	-	पाप और पुण्य
सुख - दुःख	-	सुख और दुःख
गुण - दोष	-	गुण और दोष
देश – विदेश	-	देश और विदेश
आगे – पीछे	-	आगे और पीछे
राजा - प्रजा	-	राजा और प्रजा
नर - नारी	-	नर और नारी
राधा – कृष्ण	-	राधा और कृष्ण
छल – कपट	-	छल और कपट
अपना – पराया	-	अपना और पराया
गंगा - यमुना	-	गंगा और यमुना
कपड़ा– लत्ता	-	कपड़ा और लत्ता
वेद - पुराण	-	वेद और पुराण
गाड़ी – घोड़ा	-	गाड़ी और घोड़ा
खरा - खोटा	-	खरा और खोटा
गौरी – शंकर	-	गौरी और शंकर
अन्न - जल	-	अन्न और जल
ऊंच – नीच	-	ऊंच और नीच
माता – पिता	-	माता और पिता
भाई – बहन	-	भाई और बहन
हीरा – मोती	-	हीरा और मोती
रात - दिन	-	रात और दिन
एक – दूसरे	-	एक या दूसरे
सीता – राम	-	सीता और राम
दोपहर –संध्या	-	दोपहर या संध्या
लव - कुश	-	लव और कुश
खली – भूसा	-	खली और भूसा
धनी - मानी	-	धनी और मानी
अच्छा – बुरा	-	अच्छा या बुरा
खट्टा - मीठा	-	खट्टा और मीठा
दाएँ –बाएँ	-	दाएँ या बाएँ
दाल – रोटी	-	दाल और रोटी
दानें – चारें	-	दानें और चारें
धूप – दीप	-	धूप और दीप
मारपीट	-	मार और पीट
राधे – श्याम	-	राधे और श्याम
उछलने – कूदने	-	उछलने और कूदने
नर – नारी	-	नर और नारी
आरजू – विनती	-	आरजू या विनती
लोटा – डोरी	-	लोटा और डोरी
मरना – जीना	-	मरना और जीना
आटा – दाल	-	आटा लौर दाल
गिरते – पड़ते	-	गिरते और पड़ते
ऊँच – नीच	-	ऊंच और नीच
आजकल	-	आज या कल
हानि – लाभ	-	हानि और लाभ
सोडा – नमक	-	सोडा और नामक
छोटा – बड़ा	-	छोटा और बड़ा

परमात्मा - परम है (सबसे पहले का) जो आत्मा अर्थात शिव अथवा विष्णु, ब्रह्मा

महात्मा - महान है आत्मा जिसकी (कोई पुरुष विशेष)

समस्त पद	गौण पद+गौण पद	विग्रह (सामान्य अर्थ)	सामान्य पद (इंगित अर्थ)
नीलकंठ	नील + कंठं	नीला कंठ है जिसका	शिवजी, एक पक्षी
गजानन	गज + आनन (मुख)	गज के समान है आनन जिसका	श्री गणेश जी
गिरिधर	गिरि + धर	गिरि की धारण करने वाला	श्री कृष्ण
चतुरानन	चतुर + आनन (मुख)	चार मुख वाला	ब्रह्मा जी
चक्रधर	चक्र + धर	जिसके हाथ मे चक्र हो	श्री कृष्ण
घनश्याम	घन + श्याम	काले बादल जैसा	श्री कृष्ण
त्रिलोचन	त्रि + लोचन	तीन आँखों वाला	शिवजी
दशानन	दश + आनन (मुख)	दस है आनन जिसके	रावण
महावीर	महा + वीर	महान है वीर जो	हनुमान
मयूरवाहन	मयूर + वाहन	मयूर की सवारी है जिसकी	कार्तिकेय
चतुर्भुज	चतुर + भुज	चार है भुजाएं जिसकी	विष्णु

कर्मधारय समास तथा बहुव्रीहि समास में अन्तर:-

इन दोनों समासों में अन्तर समझने के लिए इनके विग्रह पर ध्यान देना चाहिए।

⇒ कर्मधारय समास में एक पद (कोई एक पद ना कि पहला/दूसरा) विशेषण या उपमान होता है और दूसरा (कोई दूसरा पद) पद विशेष्य या उपमेय होता है।

जैसे:-

(i) नीलगगन अर्थात् नीला गगन (आकाश)/नीला है जो आकाश

व्याख्या: नीलगगन में एक पद नील अर्थात् नीला विशेषण है जबकि दूसरा पद गगन विशेष्य है।

(ii) चरण कमल अर्थात् कमल के समान चरण है जो

व्याख्या: चरण कमल में एक पद चरण उपमेय (जिसकी तुलना की जाती है) है जबकि, दूसरा पद कमल उपमान (जिससे तुलना की जाती है) है।

⇒ बहुव्रीहि समास में समस्त पद किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है।

जैसे :- चक्रधर - चक्र को धारण करता है जो अर्थात् श्री कृष्ण

व्याख्या :- यहाँ पर समस्त पद अर्थात चक्रधर श्रीकृष्ण (संज्ञा) की विशेषता बता रहा है कि वह चक्र को धारण किए हुए है।

द्विगु समास तथा बहुव्रीहि समास के अन्तर :-

उन दोनों समासों में अन्तर समझने के लिए भी इनके विग्रह पर ध्यान देना चाहिए।

बहुव्रीहि समास में समस्त पद किसी संज्ञा के विशेषण का कार्य करता है जबकि द्विगु समास का पहला पद हमेशा संख्यावाचक विशेषण होता है।

जैसे:-

(I) दशानन - दस आनन (मुख) है जिसके अर्थात् रावण - बहुव्रीहि समास

दशानन - दस आननों (मुखों) का समूह - द्विगु समास

(II) चतुर्भुज - चार है भुजाएँ जिसकी अर्थात् विष्णु - बहुव्रीहि समास

चतुर्भुज- चार भुजाओं का समूह - द्विगु समास

नोट: एक ही सामासिक (समस्त) पद दो या दो से अधिक समासों का उदाहरण हो सकता है। इसकी रूपरेखा समास के विग्रह से स्पष्ट होती है।

उदाहरण:-

नीलकंठ - नीला है कंठ जो (कर्मधारय)

नीला कंठ है जिसका - शिवजी (बहुव्रीहि)

घनश्याम - घन के समान श्याम (कर्मधारय)

घन के समान श्याम है जो – कृष्ण (बहुव्रीहि)

चन्द्रमुख - चन्द्र के समान मुख (कर्मधारय)

चन्द्र के समान है मुख जिसका – कार्तिकेय (बहुव्रीहि)

दशानन - दस आनन (मुख) (द्विगु)

दस मुख है जिसके अर्थात् रावण (बहुव्रीहि)

षडानन - छः आनन (मुख) (द्विगु) छः मुख है जिसके अर्थात् कार्तिकेय (बहुव्रीहि)

लंबोदर - लम्बा है जो उदर (कर्मधारय) लंबा है उदर (पेट) जिसका-गणेश (बहुव्रीहि)

महात्मा - महान है जो आत्मा (कर्मधारय) महान है आत्मा जिसकी (बहुव्रीहि)

- जो एक जगह से दूसरी जगह न ले जाया जा सके - स्थावर
- किसी काम में दूसरे से आगे बढ़ जाने की इच्छा - स्पर्द्धा
- जो एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर भेज दिया गया हो - स्थानान्तरित
- जिसमें स्नान किया जा सके - स्नानीय
- जो स्वेच्छा से किसी सेवा कार्य में लगता हो – स्वयं सेवक
- दो धाराओं या नदियों के मिलन का स्थान - संगम
- वह स्थान जहाँ स्थायी महत्त्व की वस्तुओं का संग्रह हो - संग्रहालय
- संचय किया हुआ - संचित
- जो दो या अधिक भिन्न तत्वों या जातियों के संसर्ग से उत्पन्न हो - संकर
- किसी रोगी द्वारा दूसरों के लगे रोग द्वारा फैलने वाला - संक्रामक
- वह जो साँप पकड़कर पालता और तमाशे दिखाता है - सँपेरा
- कुछ खास शर्तों द्वारा कोई कार्य करने कराने का समझौता - संविदा
- अलग-अलग अवयवों को एक में जोड़ना - संश्लेषण
- जिसके संबंध में संदेह हो - संदिग्ध

'ह' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- हाथी की पीठ पर रखी जाने वाली चौकी - हौदा
- हाथ से कार्य करने का कौशल - हस्तलाघव
- यज्ञ के लिए निर्धारित अग्नि - होमाग्नि
- मन को क्षुब्ध या चंचल करने वाला – हृदय प्रमार्थी
- सेना का वह भाग जो सबसे आगे रहता है - हरावल
- किसी व्यक्ति द्वारा हलफ़ के साथ लिखा हुआ न्यायालय में प्रस्तुत पत्र - हलफनामा
- दूसरों को जान से मार डालने वाला - हत्यारा
- वह जिसके पास संपत्ति या अधिकार सौंपा गया हो - हस्तांतरित
- जिसे देखकर लोग मजाक उड़ाएँ - हास्यास्पद
- भला या हित चाहने वाला - हितैषी
- जो हाथ से लिखा गया हो - हस्तलिखित
- जो बात हृदय को आकृष्ट करे – हृदयावर्जक
- हवन से संबंधित सामग्री - हवि
- जिसे देख सुनकर हृदय फटता हो – हृदय विदारक

अध्याय – 27

अलंकार

- अलंकार शब्द 'अलम्' धातु से बना है जिसका अर्थ है 'आभूषण' । जिस प्रकार सुवर्ण आदि के आभूषणों से शरीर को शोभा बढ़ती है उसी प्रकार काव्य – अलंकारों से काव्य की ।

  साफ शब्दों में जिस प्रकार स्त्रियाँ श्रृंगार कर और भी शोभायमान हो जाती है, उसी प्रकार अलंकार से कविता और भी सौंदर्यवती हो जाती है ।

- संस्कृत के अलंकार संप्रदाय के प्रतिष्ठापक आचार्य दण्डी के शब्दों में 'काव्य शोभाकरान् धर्मान अलंकारान् प्रचक्षते' – काव्य के शोभाकारक धर्म (गुण) अलंकार कहलाते हैं ।

- हिंदी के कवि केशवदास एक अलंकारवादी कवि हैं ।

अलंकार का प्रकार

अलंकार के तीन प्रकार हैं-

(A) **शब्दालंकार** – शब्द पर आश्रित अलंकार

(B) **अर्थालंकार** – अर्थ पर आश्रित अलंकार

(C) **आधुनिक / पाश्चात्य अलंकार** – आधुनिक काल में पाश्चात्य साहित्य से आए अलंकार

(A) **शब्दालंकार** –

काव्य में शब्दगत चमत्कार को शब्दालंकार कहते हैं। शब्दालंकार मुख्य रुप से सात हैं, जो निम्न प्रकार हैं- अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्तिप्रकाश, पुनरुक्तिवदाभास और वीप्सा आदि।

I. अनुप्रास अलंकार

एक या अनेक वर्गों की पास-पास तथा क्रमानुसार आवृत्ति को 'अनुप्रास अलंकार' कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं-

(i) छेकानुप्रासअलंकार

जहाँ एक या अनेक वर्णों की एक ही क्रम में एक बार आवृत्ति हो वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है ।

जैसे-

"इस करुणा कलित हृदय में,
अब विकल रागिनी बजती"

यहाँ करुणा कलित में छेकानुप्रास है।

(ii) वृत्यानुप्रास अलंकार

काव्य में पाँच वृत्तियाँ होती हैं-मधुरा, ललिता, प्रौढ़ा, परुषा और भद्रा। कुछ विद्वानों ने तीन वृत्तियों को ही

मान्यता दी है-उपनागरिका, परुषा और कोमला। इन वृत्तियों के अनुकूल वर्ण साम्य को वृत्यानुप्रास कहते हैं।

जैसे-
'कंकन, किंकिनि, नूपुर, धुनि, सुनि'

यहाँ पर 'न' की आवृत्ति पाँच बार हुई है और कोमला या मधुरा वृत्ति का पोषण हुआ है। अतः यहाँ वृत्यानुप्रास है।

(iii) श्रुत्यनुप्रास अलंकार

जहाँ एक ही उच्चारण स्थान से बोले जाने वाले वर्षों की आवृत्ति होती है, वहाँ श्रुत्यनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे-
तुलसीदास सीदति निसिदिन देखत तुम्हार निठुराई'

यहाँ 'त', 'द', 'स', 'न' एक ही उच्चारण स्थान (दन्त्य) से उच्चरित होने। वाले वर्षों की कई बार आवृत्ति हुई है, अतः यहाँ श्रुत्यनुप्रास अलंकार है।

(iv) अन्त्यानुप्रास अलंकार

जहाँ पद के अन्त के एक ही वर्ण और एक ही स्वर की आवृत्ति हो, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है;

जैसे-
"जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर"।

यहाँ दोनों पदों के अन्त में 'आगर' की आवृत्ति हुई है, अतः अन्त्यानुप्रास अलंकार है।

(v) लाटानुप्रास अलंकार

जहाँ समानार्थक शब्दों या वाक्यांशों की आवृत्ति हो परन्तु अर्थ में अन्तर हो, वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है;

जैसे-
"पूत सपूत, तो क्यों धन संचय?
पूत कपूत, तो क्यों धन संचय"?

यहाँ प्रथम और द्वितीय पंक्तियों में एक ही अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग हुआ, है परन्तु प्रथम और द्वितीय पंक्ति में अन्तर स्पष्ट है, अतः यहाँ लाटानुप्रास अलंकार है।

2. यमक अलंकार

जहाँ एक शब्द या शब्द समूह अनेक बार आए किन्तु उनका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है;

जैसे-
"जेते तुम तारे, तेते नभ में न तारे हैं"

यहाँ पर 'तारे' शब्द दो बार आया है। प्रथम का अर्थ 'तारण करना' या 'उद्धार करना' है और द्वितीय 'तारे' का अर्थ 'तारागण' है, अतः यहाँ यमक अलंकार है।

जैसे –

"कनक – कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय"

वा खाए बौराय जग, या पाए बौराय" ।।

कनक शब्द की एक बार आवृति । सोना 2. धतूरा

3. श्लेष अलंकार

एक शब्द में एक से अधिक अर्थ जुड़े हों (जहाँ कोई शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो किन्तु प्रसंग भेद में उसके अर्थ अलग-अलग हो वहां श्लेष अलंकार होता है।

जैसे-
"रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।।"

यहाँ 'पानी' के तीन अर्थ है—'कान्ति', 'आत्मसम्मान' और 'जल', अतः यहाँ श्लेष अलंकार है।

4. वक्रोक्ति अलंकार

जहाँ पर वक्ता द्वारा भिन्न अभिप्राय से व्यक्त किए गए कथन का श्रोता 'श्लेष' या 'काकु' द्वारा भिन्न अर्थ की कल्पना कर लेता है, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है।

इसके दो भेद हैं-श्लेष वक्रोक्ति और काकु वक्रोक्ति।

(i) श्लेष वक्रोक्ति अलंकार

जहाँ शब्द के श्लेषार्थ के द्वारा श्रोता वक्ता के कथन से भिन्न अर्थ अपनी रुचि या परिस्थिति के अनुकूल अर्थ ग्रहण करता है, वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है।

जैसे-
"गिरजे तुव भिक्षु आज कहाँ गयो,
जाइ लखौ बलिराज के द्वारे।
व नृत्य करै नित ही कित है,
ब्रज में सखि सूर-सुता के किनारे।
पशुपाल कहाँ? मिलि जाइ कहूँ,
वह चारत धेनु अरण्य मँझारे।।"

एक कबूतर देख हाथ में पूछा कहाँ अपर है?

उसने कहा अपर कैसा ? वह उड़ गया सपर है ।।

यहाँ पूर्वार्द्ध में जहाँगीर ने दूसरे कबूतर के बारे में पूछने के लिए 'अपर' (दूसरा)शब्द का प्रयोग किया गया है जबकि उतरार्द्ध में नूरजहाँ ने 'अपर'का "बिना पर (पंख) वाला अर्थ कर उत्तर दिया है।

(ii) काकु वक्रोक्ति अलंकार

जहाँ किसी कथन का कण्ठ की ध्वनि के कारण दूसरा अर्थ निकलता है, वहाँ काकु वक्रोक्ति अलंकार होता है।
जैसे-
"मैं सुकुमारि, नाथ वन जोगू।
तुमहि उचित तप मो कहँ भोगू।"

19. दीपक अलंकार

जहाँ उपमेय और उपमान दोनों का एक धर्म कहा जाए, वहाँ दीपक अलंकार होता है। अर्थात् जिस प्रकार एक स्थान पर रखा हुआ दीपक अनेक वस्तुओं को प्रकाशित करता है।

उदाहरण –

चंचल निशि उदवस रहें, करत प्रात वसिराज।

अरविंदन में इंदिरा, सुन्दरी नैंनन लाज॥

कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात।

भरे भौन में करत हैं नैंयन ही सब बात॥

20. अप्रस्तुत प्रशंसा

जहाँ अप्रस्तुत (उपमान)का वर्णन करते हुए प्रस्तुत का कथन होता है, वहाँ अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार होता है।

उदाहरण

सागर की लहर- लहर में है हास स्वर्ण-किरणों का।

सागर के अन्तस्तल में अवसाद अवाक कणों का॥

(यहाँ अप्रस्तुत सागर के वर्णन से प्रस्तुत धीर, वीर गंभीर व्यक्ति का वर्णन किया गया है)

स्वारथ सुकृत न स्त्रम वृथा, देखू विहंग विचारि।

बाज पराये पानि परि तू पंछीन न मारि॥

21. व्यतिरेक अलंकार

उपमेय की उपमान से अधिकता का अथवा उपमान की न्यूनता का वर्णन ही व्यतिरेक है।

उदाहरण

संत हृदय नवनीत सामना, कहा कविन्हपारी कहैं न जाना।

निज परिताप द्रवैं नवीनता, परदुख द्रवहि सुसंत पुनीता॥

यहाँ उपमेय संत हृदय के लिए वर्णित उपमान नवनीत को उपमेय से न्यून कथित किया गया है। अतः वतिरेक है।

22. स्मरण अलंकार

जब पूर्व में देखे सुने पदार्थ के सादृश अन्य पदार्थ को देखकर उसकी स्मृति का होना स्मरण अलंकार है।

उदाहरण-

थूहर पलाश देखि-देखि के बबूर बुरे,

हाय-हाय मेरे व तमाल सुधि आवैं हैं।

23. उल्लेख अलंकार

एक पदार्थ को जब अनेक प्रकार से वर्णन किया जाए तो उल्लेख अलंकार होता है। यह उल्लेख दो रूपों में होता है-

1.एक ही व्यक्ति द्वारा, 2. अनेक व्यक्तियों द्वारा

उदाहरण –

जानति सौंति अनीति है,जानत सखी सुनीति।

गुरुजन जानति लाज है प्रीतम जानति प्रीति॥

यहाँ सौंत, सखी, गुरुजन तथा प्रिय द्वारा नायिका को विविध प्रकार से देखने के वर्णन में उल्लेख है।

24. दृष्टांत अलंकार

यहाँ उपमेय वाक्य उपमान वाक्य एवं उनके साधारण धर्मों में यदि बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव हो तो दृष्टांत अलंकार होता है।

उदाहरण

परी प्रेम नंदलाल के मोहि न भावत जोग। मधुप राजपद पाईकै भीखन माँगत लोग॥

25. निदर्शना अलंकार

दो पदार्थों का सम्भव या असम्भव सम्बन्ध उनमें सादृश्य की कल्पना कराए तो निदर्शना अलंकार होता है।

उदाहरण

रसवारे प्यारे परम अरुनारे अति ऐन।

कमलन के गुन गहि रहे, नवनागरितुव नैंन॥

26.समासोक्ति अलंकार

जब प्रस्तुत वृतान्त के द्वारा अप्रस्तुत वृतान्त की प्रतीति हो तो समासोक्ति अलंकार होता है।

उदाहरण

नहिं पराग नहिं मधुरमधु नहिं विकास इहिं काल।

अली कली ही सौं विध्यो, आगे कौंन हवाल॥

27. पर्यायोक्ति अलंकार

किसी पदार्थ का जिस प्रकार से कथन किया जाता है यदि उसे छोड़कर अन्य तरीके से कथन किया जाए तो पर्यायोक्ति होती है।

उदाहरण –

फेरि कछुक करि पौंरिते फिरि चितई मुसक्याय।

आई मामन लेन तिय, नेहैं गई जमाय॥

28. असंगति अलंकार

इसमें कारण का होना कहीं और कार्य का होना कहीं वर्णित होता है

उदाहरण

लागत जो कंटक तिहारे पाँइ प्यारे हाइ,

आई पहिले- ही हिय बोधत हमारे है।

यहाँ पैर में कांटा गड़ता है ; बिधता है हृदय।

अतः असंगति है।

29. यथासंख्य (क्रम) अलंकार

जहाँ पूर्व कथित पदर्थों के क्रम का उसी क्रम से अंत तक निर्वाह करने का वर्णन होता है। उसे यथासंख्य अलंकार कहते हैं।

Chapter - 4

Adjective (विशेषण)

संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं।

Adjective is a word that tells what kind of a person, place, animal or a thing is. In other words adjective tells something about the noun

Ex-.

1. She is a **good** girl.
2. Alwar is a **small** city.
3. He gave me **five** pencils.
4. This is **my** pen.
5. I have a **red** car.
6. His **red** car is missing.
7. I Saw a boy **climbing the wall**.

ऊपर दिए गये सभी highlighted शब्द noun के बारे में कुछ न कुछ जानकारी दे रहे हैं। जैसे girl अच्छी(good) है। , city छोटी(small) है , पेंसिल पांच(five) है pen मेरा (my) है , car लाल(red) है , उसकी कार लाल है, लड़का जो दीवार पर चढ़ रहा है

सामान्यतः 'adjective' noun से पहले या article(A , An ,The) और noun के बीच में आता है।

- Adjective की position के आधार पर adjective three types के होते है –

1.**Postpositive adjective:-** ये noun के तुरंत बाद आते है।

Ex- The best seats **available**.

The worst manners **imaginable**.

2.**Attributive adjective:-** ये noun से पहले प्रयोग किये जाते है।

Ex- He was a **great** king.

12. **predicative adjective:-** ये verb के तुरंत बाद आते है। जैसे –

Ex- you are honest.

I am ill.

adjective की पहचान :- सामान्यतः adjective के अंतिम के कुछ अक्षरों से adjective की पहचान की जा सकती है नीचे कुछ ऐसे word दिए गये है। जिनकी मदद से आप adjective की पहचान कर सकते है। जैसे :-

- **ful** = beautiful , colourful
- **tive** = positive , Negative
- **ic** = genetic
- **ous** = continous
- **able** = readable
- **ible** = permissible
- **al** = national

कुछ adjective verb की 3rd form में भी होते है। जैसे:-

Abandoned rubber factory

Dilapidated factory

Developed country

Broken chair

Some other adjective:-

Issued by , implemented by ,given by , released by, levelled by , motivated by

use in sentences:-

1. He was violating covid-19 rules **implemented by** the university.

2. According to health bulletin **released by** delhi goverment.

Kind of Adjectives

1. **Proper Adjective:-** proper noun से बनने वाले adjective ,proper adjective कहलाते है। जैसे :- Indian, African , American , European etc.

noun	adjective
india	indian
africa	african

2. **Adjective of Quality(गुणवाचक विशेषण):-**ये किसी व्यक्ति ,वस्तु या स्थान की quality(विशेषता) बताते है। जैसे :-

honest man

beautiful girl

big city

large building

black dog

white tiger

चेन्नई एक बड़ा शहर है।

Chennai is a **big** city.

प्रकाश एक ईमानदार लड़का है।

Prakash is an **honest** boy.

मोहन एक उपद्रवी लड़का है।

Mohan is a **mischievous** boy

3. **Adjective of Quantity(परिमाणवाचक विशेषण):-** ये noun की quantity (परिमाण , मात्रा) को बताता है। जैसे :- Whole , Some ,Enough ,Sufficient , No Full, Entire etc.

Example -

गली में कुछ आदमी है।

There are **some** men in the street.

बर्तन में बहुत कम पानी था।

There was a **little** water in the pot.

सारा धन खर्च कर दिया गया।

The **whole** sum was expended.

अपने स्वास्थ्य का ठीक से ध्यान रखो।

Take **great** care of your health.

4. **Adjective of Number(संख्यावाचक विशेषण)**:- यह व्यक्तियों ,वस्तुओं की संख्या व्यक्त करता है ,या उनके क्रम(Order) को व्यक्त करता है। जैसे :-
One ,Two.... , many , Few , All , Some ,First , Second.....Last ,next etc.
adjective of number को तीन भागों में बाँटा गया है।

(a) **Definite Number Adjectives(संख्यावाचक विशेषण)**:- जो निश्चित संख्या या क्रम की जानकारी देता है। जैसे :- One ,two ,three....ये cardinals कहलाते है। First ,second ,third ..... ये ordinals कहलाते है ।

मैं बारहवीं कक्षा में पढ़ता हूँ।
I read in class **XII**.
लता की दो बहिने है।
Lata has **two** sisters.

(b) **Indefinite Number Adjectives**:- जो निश्चित संख्या या क्रम की जानकारी नहीं देते है। जैसे :- Any , All , Few, Some, Several, Many, Certain etc.
कुछ छात्र चतुर है।
Some boys are clever.
सभी लोगों को मरना है।
All men must die.

(c) **Distributive Adjectives**:- ये distribution को दिखाते है। जैसे – Either , Each , Every , Neither etc.

सभी छात्रों की बारी आनी चाहिए।
Each boy must take his turn
इस कथन के सभी शब्द गलत है।
Every word of this statement is false.

5. **Demonstrative adjective(संकेतवाचक विशेषण)**:-
ये व्यक्ति और वस्तु को point out करता है। जैसे :-this ,that ,these ,such ,those etc.
ये विशेषण किसी विशेष वस्तु या व्यक्ति को व्यक्त करते है।
Example:
ये सेब सड़े हुए है।
These apples are rotten.
वे लड़के खेल रहे है।
Those boys are playing
इतनी जल्दबाजी मत करो।
Don't be in **such** a hurry.
वह व्यक्ति उद्योगपति है।
That man is industrialist.

6. **Interrogative adjective**:- ये प्रश्न करते हुए adjective का कार्य करते है। जैसे:- what ,whose , which ,where
Example: वह कैसा व्यक्ति है।
What kind of man is he?
वह घर कब आता है।
When does he come home

7. **Emphasizing adjective(निजवाचक विशेषण)**:- ये noun को emphasise(जोर देना) करते है। जैसे:-Own , Very , Quite
Example: मैंने स्वयं उसे देखा है।
I saw it with my **own** eyes.
हमें जो चाहिए वह वही वस्तु है।
That is the **very** thing that we want.

8. **Exclamatory adjective(विस्मयादिबोधक विशेषण)**:-
what का प्रयोग वाक्य में exclamation के लिए होता है।
जैसे:- what a beautiful girl !
What an idea !

9. **Possessive Adjective** :- ये noun का अधिकार व्यक्त करते है। जैसे:- My , His , Her , Your , Their etc.

COMPARISON OF ADJECTIVES

Adjective. का प्रयोग तीन degrees में किया जाता है- Positive, Comparative एवं Superlative degree.
जब एक (व्यक्ति, वस्तु, समूह इत्यादि) की विशेषता का वर्णन करना हो , तो Positive degree का प्रयोग होता है।
जैसे: He is a good boy.
जब एक की तुलना दूसरे से की जाए तो Comparative degree का प्रयोग होता है।
जैसे: He is better than you.
जब सभी में से एक का चुनाव किया जाए तो superlative degree का प्रयोग होगा।
जैसे: He is the best student of my class.

❖ सामान्यतः किसी adjective की comparative degree बनाने के लिए positive degree में 'er' लगाया जाता है और superlative degree बनाने के लिए positive degree में 'est' लगाया

Positive	Comparative	Superlative
Bold	Bolder	Boldest
Deep	Deeper	Deepest
High	Higher	Highest
Strong	Stronger	Strongest
Thick	Thicker	Thickest
Weak	Weaker	Weakest
Old	Older	Oldest

❖ यदि positive degree के अंत में 'e' हो तो comparative में केवल 'r' और superlative में 'st' लगाते है।

Positive	Comparative	Superlative
Fine	Finer	Finest
Brave	Braver	Bravest
Able	Abler	Ablest

(b) A little का प्रयोग 'थोड़ा' या 'कुछ' के अर्थ में मात्रा (quantity) का बोध कराने के लिए Singular Uncountable Noun के पहले होता है। यह positive meaning (सकारात्मक अर्थ) रखता है। जैसे
He has a little money. उसके पास कुछ धन है।
Negative idea (नकारात्मक विचार) को अभिव्यक्त (express) करने के लिए A little का प्रयोग नहीं होता है।

(c) The little का प्रयोग 'जो कुछ है थोड़ा मात्रा में या 'मात्रा तो कम है। पर पूरा का पूरा' या 'मात्रा तो कम है, पर सब का सब के अर्थ में Singular Uncountable Noun के पहले होता है। यह positive और negative दोनों meaning (अर्थ) रखता है। जैसे–
I spent the little money I had.

(i) I spent all the money I had. - Positive

(ii) The money I had was not much. – Negative

4. Use of 'few', 'A few' and 'The few'

(a) Few का प्रयोग नहीं के बराबर', 'अल्प' या नगण्य' के अर्थ में संख्य (number) का बोध कराने के लिए Plural Countable Noun के पहले होता है। यह negative meaning (नकारात्मक अर्थ) रखता है। जैसे
I read few books.
अर्थ = I did not read many books.
मैंने नहीं के बराबर (संख्या में) पुस्तकें पढ़ी है ।
Positive idea (सकारात्मक विचार) को लिए few का प्रयोग नहीं होता है।

(b) A few का प्रयोग कुछ या थोड़ा (कम से कम) के अर्थ में संख्या (number) का बोध कराने के लिए Plural Countable Noun के पहले होता है। यह positive meaning (सकारात्मक अर्थ) रखता है। जैसे
I read a few books.
I read at least some books.
मैंने कुछ संख्या में पुस्तकें पढ़ी।
Negative idea (नकारात्मक विचार) को अभिव्यक्त (express) करने के लिए A few का प्रयोग नहीं होता है।

(c) The few का प्रयोग 'जो कुछ है थोड़ी संख्या में या संख्या कम है पर पूरा का पूरा" के अर्थ में Plural Countable Noun के पहले होता है। यह positive और negative दोनों meaning रखता है जैसे :-
I read the few books I had.
अर्थ:- (i) I read all the books I had. (Positive)
(ii) The books I had were not many. (Negative)

Note: Very few or very little का प्रयोग Affirmative sense (अर्थ) में होता है। जैसे :-
He has very little time.
Very few students know about this.
'Quantity' एवं 'Number' शब्द के साथ Little एवं Few का प्रयोग नहीं हो सकता है। इनके साथ 'small' का प्रयोग होता है।
Little quantity of food was wasted. (x) Small quantity of food was wasted. (✓)

ADJECTIVE के सही प्रयोग

RULE 1

Comparative degree में adjective or.... than' का प्रयोग होता है। Than के पहले हमेशा comparative degree का प्रयोग करें। He is better than his brother. Comparative degree के बाद 'than' का प्रयोग हो भी सकता है और नहीं भी। जैसे :-
Today I am feeling better.

RULE 2

'as.....as' and 'so.....as' के बीच adjective/adverb के positive degree का प्रयोग करें।
He is as good as his brother.
He ran as fast as he could.

RULE 3

Superlative degree के पहले article 'the' का प्रयोग होता है।
जैसे: He is the best player of the team,

RULE 4

जब एक Noun या Pronoun की दो विशेषताओं के बीच तुलना हो तो Comparative degree नहीं more + positive degree का प्रयोग करें।
He is wiser than intelligent. (x)
He is more wise than intelligent. (✓)

RULE 5

अगर सिर्फ दो व्यक्ति/वस्तु इत्यादि के बीच में से एक का चुनाव किया जाये हो तो superlative degree का प्रयोग नहीं comparative degree का प्रयोग करें जिसके पहले article 'the' और जिसके बाद preposition of लगाये।
जैसे:
She is the best of the two sisters. (x)
She is the better of the two sisters . (✓)
अगर सभी में से एक का चुनाव किया जाये तो 'superlative degree' का प्रयोग होगा जिसके पहले भी article 'the' का प्रयोग होगा और जिसके बाद preposition of का प्रयोग होगा ।
जैसे: He is the best of all the players.

He is as good as you. (✓)

Rule (15):-

Doubt affirmative sentence में if/whether का प्रयोग होता है, जबकि negative or Interrogative sentence में doubt के बाद that का प्रयोग होता है। **जैसे:-**

He doubts if/whether Manisha will marry him.(Affirmative)(✓)

He doubts that Manisha will marry him. (x)

I have not any doubt that the publisher will cheat me.(Negative) (✓)

I have not any doubt if/whether the publisher will cheat me. (x)

ध्यान दें:- Doubtful के बाद भी Affirmative sentence में if/ whether का प्रयोग होता है, जबकि Negative or Interrogative sentence में doubtful के बाद that का प्रयोग होता है। **जैसे:-**

I am doubtful if/whether my teacher will allow me to go to the circus.(Affirmative) (√)

I am doubtful that my teacher will allow me to go to the circus. (x)

He is not doubtful that his brother will finish his home work.(Negative) (✓)

He is not doubtful if/whether his brother will finish his homework. (x)

Chapter – 9

Time And Tense

Time (समय) और Tense (काल) दोनों ऐसे शब्द हैं जिनमें संबंध होते हुए भी अंतर है।

Time का प्रयोग सामान्य अर्थ में होता है, जबकि Tense का प्रयोग विशेष अर्थ में Verb के form का निरूपण करने के लिए किया जाता है। चलिए नीचे दिए गए उदाहरणों पर हम लोग विचार करते हैं –

1. Veena goes to the market every Sunday.
2. The plane takes off at 5 p.m. tomorrow.
3. He had no money yesterday.

उदाहरण (1) में Simple Present Tense का प्रयोग किया गया है। लेकिन इससे Past, Present, और Future तीनों का बोध होता है, वीणा Past time में प्रत्येक रविवार को जाती है और आशा है कि Future time में भी प्रत्येक रविवार को जाएगी।

उदाहरण (2) में स्पष्ट होता है कि प्लेन (plane) कल 5 बजे शाम को प्रस्थान करेगा। इस वाक्य में भी Simple Present Tense का प्रयोग किया गया है, लेकिन इससे future time का बोध होता है।

उदाहरण (3) में Simple Past Tense का प्रयोग किया गया है, तथा इससे past time का बोध होता है।

ऊपर दिए गए उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि Verb के Present Tense में रहने पर भी इस पर Present, Past और Future Time का बोध होता है।

अत; Verb के Tense तथा इसके प्रयोग को सावधानी से समझने की जरूरत है सर्वप्रथम एक प्रश्न उठता है कि Tense क्या है? इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है :-

Tense : कार्य के समय के मुताबिक Verb के रूप में जो परिवर्तन होता है, उसे Tense कहते हैं।

Kinds of Tense

1. Present Tense (वर्तमान काल)
2. Past Tense (भूतकाल)
3. Future Tense (भविष्य काल)

I. Present Tense : किसी कार्य के वर्तमान समय में होने या करने जैसे- हो रहा है, हो चुका है, या हो गया है तथा एक लंबे समय से होता रहा है, का बोध हो तो उसे Present Tense कहते हैं।

दूसरे शब्दों में - An action which is done at the present time. जैसे -

1. I read a book
   मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
2. I am reading a book
   मैं पुस्तक पढ़ रहा हूँ।

3. I have read a book
मैं पुस्तक पढ़ चुका हूँ।
4. I have been reading a book for an hour
मैं दो घंटे से पुस्तक पढ़ता रहा हूँ।

2. Past Tense : किसी कार्य के बीते हुए समय में होने या करने, हो रहा था, हो चुका था, या हो गया था तथा एक लंबे समय से होता रहा था का बोध हो, तो उसे Past Tense कहते हैं।

दूसरे शब्दों में- An action which is done at the Past time. जैसे -

1. I wrote a letter.
मैं पत्र लिखता था या मैंने पत्र लिखा।
2. I was writing a letter.
मैं पत्र लिख रहा था।
3. I had written a letter.
मैं पत्र लिख चुका था या मैंने पत्र लिखा था
4. I had been writing a letter for two days.
मैं दो दिनों से पत्र लिख रहा था

3. Future Tense : किसी कार्य के आने वाले समय में होने या करने जैसे-हो रहा होगा, होता रहेगा, हो चुका होगा या हो गया होगा तथा एक निश्चित समय से होता आ रहा होगा का बोध हो, उसे Future Tense कहते हैं। जैसे -
1. I shall write a letter.
मैं पत्र लिखूंगा।
2.I shall be writing later.
मैं पत्र लिख रहा हूंगा।
3.I shall have written a letter.
मैं पत्र लिख चुका हूंगा।
4. I shall have been writing a letter.
मैं पत्र लिखता आ रहा होऊंगा।

उपयुक्त उदहारण से यह स्पष्ट होता है कि Present, Past तथा Future Tense के भी चार -चार उपभेद होते हैं।

I. Present Tense

Present Tense के चार उपभेद होते हैं।
1. Present Indefinite Tense /Simple Present Tense (सामान्य वर्तमान काल)
2. Present Continuous / Progressive Tense (अपूर्ण वर्तमान काल / तात्कालिक वर्तमान काल)
3. Present Perfect Tense(पूर्ण वर्तमान काल)
4. Present perfect continuous tense (पूर्णापूर्ण वर्तमान काल / पूर्ण तात्कालिक वर्तमान काल)

I. Simple Present Tense

Structure :

Positive tense :-
Subject +main verb +s/es+Object
Ex-Ram reads books.
Note:- अगर subject singular है (जैसे- he, she, it या किसी व्यक्ति का नाम) तो verb की first form में s या es प्रयोग करेंगें ।
Negative:-
Subject+do/does+not+main verb+Object
Ex- Ram does not read books.
Interrogative:-
1st type:-
Do/does+subj+not+main verb+Object+?

2nd type :-WH words + 1st type
Ex- Does ram read books?
note:-यदि subject एकवचन(He ,She ,It ,name) होगा तो main verb में s या es लगायेंगे और अगर subject बहुवचन(you ,we,they) होगा तो main verb में s या es नहीं लगायेंगे ।
जैसे :-
ram **reads** books.
they **read** books.

Rule (1): Simple Present Tense का प्रयोग habitual, or regular or repeated action (नियमित या स्वाभाविक कार्य) को express (अभिव्यक्त) करने के लिए किया जाता है। जैसे -
Mukesh goes to bed at 10 P.M.
He always comes here on Sunday.
She reads a newspaper every morning.
He takes tea without sugar.
We work eight hours a day.
I live at Mahendru.
Shweta and Anshu are girls.
I get up at 6 a.m. every morning.

Note : सामान्यतः Time expressing Adverbs (समय सूचक क्रिया विशेषण) जैसे -
always, often, sometimes, generally, usually, occasionally, rarely, seldom, never, hardly, scarcely, habitually, daily, everyday, every night, every morning, every evening, every week, every month, every year, once a week, once a day, once a month, twise a day, twice a week, twice a month आदि का प्रयोग habitual, or regular or repeated action को express करने के लिए किया जाता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि उपरोक्त Adverbs का प्रयोग होने पर Simple Present Tense का प्रयोग होता है जैसे-

किन्तु appear का प्रयोग प्रकट होना / उपस्थित होना' (to come before the public) के अर्थ में होने पर,इसका प्रयोग Continuous Tense में होता है। जैसे -

The moon is appearing in the sky.
चांद आकाश में प्रकट हो रहा है।
The main actor is appearing before the spectators.
मुख्य अभिनेता दर्शकों के सामने प्रकट/ उपस्थित हो रहा है ।

ध्यान दें : Appear का प्रयोग 'प्रकाशित होना' के अर्थ में होने पर, इसका प्रयोग Continuous Tense में भी होता है जैसे-

He is appearing in his new book.
वह अपनी नई पुस्तक प्रकाशित कर रहा है ।
When is his new book appearing?
उसकी नई पुस्तक कब प्रकाशित हो रही है?

6. Smell का प्रयोग सामान्यतः 'महकना' के अर्थ में होता है। इस अर्थ में इसका प्रयोग Simple Tense में होता है, ना कि Continuous Tense में। जैसे -

The flower smells sweet. (✓)
The flower is smelling sweet. (x)

लेकिन smell का प्रयोग sniff at (नाक से सशब्द हवा खींचना या नाक पर सटाकर सूंघना) के अर्थ में होने पर, इसका प्रयोग Continuous Tense में होता है। जैसे -

He is smelling the flower.
वे फूल सूंघ रहा है।

7.Taste का प्रयोग सामान्यतः 'स्वाद देना' के अर्थ में होता है। इस अर्थ में इसका प्रयोग Simple Tense में होता है ना कि Continuous Tense में जैसे -

This tea tastes sweet. (✓)
This tea is testing sweet. (x)
This coffee tastes bitter. (✓)
This coffee is testing bitter. (x)

लेकिन taste का प्रयोग तो ' test the flavour of ' (स्वाद की जाँच करना) के अर्थ में होने पर, इसका प्रयोग Continuous Tense में होता है। जैसे -

He is tasting the milk pudding.
वह दूध की खीर के स्वाद की जाँच कर रहा है।

8.Expect का प्रयोग ' प्रतिक्षा करना ' (await/ wait for) के अर्थ में होने पर, इसका प्रयोग Continuous Tense में होता है। जैसे -

She is expecting a baby in September.
He is expecting his love letter.

9. Look का प्रयोग ' देखना, निगाह डालना ' के अर्थ में सामान्यतः Simple Tense में होता है। जैसे -

The girl looks beautiful.

लेकिन look for (तलाश करना), look into (ध्यान से समझना) look on (क्षण भर के लिए देखना) आदि का प्रयोग Continuous Tense में होता है। जैसे -

He is looking for his handkerchief.

Rule (6) : इस Tense का प्रयोग Continued increase or decrease (लगातार वृद्धि या ह्रास) का बोध करने के लिए होता है। जैसे -

Her health is gradually improving.
The number of audience is increasing.

3. Present Perfect Tense

Structure:
Positive=
Subject+has/have+MV3 +Object
Ex- I have taken lunch.
Negative=
Subject+has/have+not +MV3+Object
Ex- I have not taken lunch.
Interrogative=
1st type:-
Has/have+Subject+MV3+Object+?
2nd type :-WH words + 1st type
Ex- Have I taken lunch?

Use of Present Perfect Tense :

Rule (1) : Present Perfect Tense का प्रयोग ऐसे (actions)कार्यों के लिए होता है, जो तुरंत समाप्त हुये हो । **जैसे -**

She has written a letter.
I have just bought a pen.
He has gone to Patna market.

Rule (2) : इस Tense का प्रयोग ऐसे Past Actions के लिए होता है, जो Present Time में जारी है। अर्थात जिसका प्रभाव Present Time में है।

जैसे -

He has cut his finger.
उसने अपनी उंगली काट ली है, अर्थात् खून बह रहा है।
She has finished her work.
उसने अपने कार्य समाप्त कर लिया है, अर्थात् अब वह कार्य से मुक्त है।
My daughter has eaten all the apples.
मेरी पुत्री सब सेब खा गई है, अर्थात् वह एक भी सेब दूसरे के लिए नहीं छोड़ी है।
उपरोक्त वाक्यों से स्पष्ट है कि कार्य - past में हुए हैं, लेकिन उसका प्रभाव वर्तमान में जारी है।

Rule (3) : इस Tense का प्रयोग ऐसे past actions के लिये होता है, जो past में शुरू हुआ हो और अब भी जारी है। ऐसे actions के साथ for / since का प्रयोग जरुरत के मुताबिक होता है। जैसे -

I have lived in the house since 1999.
मैं 1999 ई० से इस घर में रह रहा हूँ अर्थात् मैं अभी भी इस घर में रह रहा हूँ।

He has taught in the school for five years.
वह पाँच वर्षों से इस स्कूल में पढ़ा रहा है, अर्थात् वह अभी भी इस स्कूल में पढ़ा रहा है।

She has been ill since Friday.
वह शुक्रवार से बीमार है, अर्थात् वह अभी भी बीमार है।

Rule (4) : इस Tense का प्रयोग ऐसे past actions के लिए होता है जो past में समाप्त हुआ है, लेकिन उसका समय निश्चित रूप से अज्ञात है। जैसे -

She has gone to America.
Have you read 'The Arabian Night' ?

Rule (5) : Present Perfect Tense के साथ past time expressing words - last year, last week, last month, yesterday, the other day,ago etc. का प्रयोग नहीं होता है। जैसे -

I have seen him last year.	(x)
I saw him last year.	(✓)
He has arrived last week.	(x)
He arrived last week.	(✓)
She has come the other day.	(x)
She came the other day.	(✓)

Rule (6) : Present Perfect Tense के साथ नीचे दिए गए Adverbs or Adverbial pharases का प्रयोग होता है। जैसे -

Adverbs	Meanings
1. ever	कभी
2. never	कभी नहीं
3. always	हमेशा / सदा
4. occasionally	कभी-कभी
5. often	प्रायः / अक्सर
6. several time	अनेक बार
7. already	पहले से ही
8. yet	अब तक /अभी तक (बोलने के समय तक)
9. just	तुरन्त
10. lately	हाल में
11. recently	हाल में
12. so far	अब तक / जहाँ तक
13. up to now	अभी तक
14. Up to the present	वर्तमान समय तक
15. since	से
16. for	से
17. during the last few weeks	अंतिम कुछ सप्ताहों के दौरान
18. during the last few years	अंतिम कुछ वर्षो/सालों के दौरान

He has come recently. (✓)
She has not gone yet. (✓)
He has worked here for five hours. (✓)
The train has already left. (✓)
Mukesh has not completed his work up to now. (✓)
He came recently. (x)
She did not go yet. (x)
He worked here for five hours. (x)
The train already left. (x)
Mukesh completed his work up to now.(x)
उपर्युक्त Adverbs में से कुछ का प्रयोग Simple Past Tense में भी होता है।

4. Present Perfect Continuous Tense

Structure:-

positive:-sub+has/have+been+Ving+obj+since/for +.....

Ex-He has been playing for two hours.

Negative:-
sub+has/have+not+been+Ving+obj+since/for+.....
Ex- He has not been playing for two hours.

Interrogative:- Ist type :-
Has/have+sub+been+Ving+obj+since/for+.....?

2nd type :-WH words + Ist type
Ex- Has he been playing for two hours?

Use of present perfect continuous tense:-

I.जब कोई कार्य past से लगातार चला आ रहा हो और present में भी चल रहा हो तो present perfect continuous tense का प्रयोग करते है।

जैसे:-
He has been studying for two hours.
वह दो घण्टे से पढाई कर रहा है ।

Note : Since / for का प्रयोग Present perfect tense, Present Perfect Continuous Tense, Past Perfect Tense, तथा Past Perfect Continuous Tense में होता है।

अतः हम लोग since / for के प्रयोग पर विचार करते है। सभी परीक्षाओं के लिए for / since महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे संबंधित प्रश्न पूछे जाते है।

Use of 'for' and 'since':-

(A) **Uses of 'for'** : for is used before indefinite / uncertain period of time

Chapter – 16

Idioms & phrases

1.carpeteeping statement - Thoughtless statement - व्यापक बयान
2. All at sea - puzzled - आश्चर्यचकित
3. Enough rope - Enough freedom for action - कार्य करने की स्वतंत्रता देना
4.By fits and start - irregularly - अनियमित
5.Fell foul of - Got into trouble with - दुविधा में फसना
6.Token strike - short strike held as waring - बड़ी हड़ताल की चेतावनी
7.Face the music - Get reprimanded - डाट खाना / आलोचना खेलना
8.Look down upon - Hate intensely - घृणा करना
9.Flogging a dead horse - wasting time in useless effort - बेकार कार्य में समय बर्बाद करना
10.under a cloud - under suspicion - शक के दायरे में
11.Green thumb - To have a natural interest / स्वाभाविकता
12.played havoc - caused destruction / तबाही मचाना
13.No love lost between - Not on good terms / संबंधों में खटास होना
14.Fair and square - Honest / ईमानदार
15.A white elephant -costly or troublesome possession/ महँगी और व्यस्त वस्तु
16.Out and out -Totally / पूर्णतयः
17. On the cuff - On credit / उधारी पर
18.Does not hold water - cannot be believed / विश्वास करने के अयोग्य
19. A wild goose chase - Futile search / व्यर्थ प्रयास
20. In a tight corner - In a difficult situation / कठिन परिस्थिति में
21. Going places - Talented and successful / प्रतिभाशाली और सफल व्यक्ति
22. In cold blood - A murder done with intention / निर्गम हत्या
23. Off and on - Occasionally / कभी-कभी
24.Hart and fast - strict / सख्त
25. Took to heels - Run away in fear / डर कर भागना
26. To keep up - To keep in touch / संपर्क में रहना
27. Make a clean breast - confess without reserve / बिना झिझक या डर के जुर्म या गलती कबूलना
28. Heads will roll - Transfers will take place / स्थानांतरण होना
29. Make no bones about - Do not have any hesitation in anything / बेझिझक
30. Take after - Resembles / समान होना
31. To stave off - postpone / टाल देना
32. To give a piece of mind - To reprimand / फटकारना
33. Rest on laurels - To be complacent / पुरानी उपलब्धियों का गुणगान करना
34. Pay through nose - Pay an extremely high price / अत्यधिक मूल्य भरना
35. Draw on fancy - Use imagination / कल्पना करना
36.Turn an honest living - Make an legitimate living / ईमानदारी से जीना
37.Give the game away - Give out the secret / राज खोलना
38.cheek by jowl - Very near / बहुत नजदीक
39.Give in - yield / हार मानना
40. Run riot - Act without restraint / स्वतंत्रता का हनन करना
41. Go through fire and water - Undergo any risk / कोई भी खतरा मोल लेना
run. Talking through hat - Talking nonsense / बकवास करना
43. Put up with - Tolerate / बर्दाश्त करना
44. By fits and starts - Irregularly / अनियमित
45. Reading between the lines - Understanding the hidden meaning / छुपे हुए अर्थ को समझ लेना
46. Get the sack - Dismissed from / बर्खास्त हो रहा
47. Pros and cons - considering all the facts / सारे पहलुयो को जांचना
48.By leaps and bounds - very quickly / शीघ्रता से
49. In the good books - In favour with boss / अच्छे संबंध बनाए रखना
50. In the long run - Ultimately / आखिरकार
51. To be always one's beck and call - At one's disposal (Ready to serve one'smaster) / आज्ञा में हाजिर रहना
52. Turn a deaf ear - Disregard / Ignore / Refuse / अनुशासन करना
53. At one's Wait 's end - Puzzled / Confused / Perplexed / चकित

54. To fight tooth and nail - To fight in a determined way for what you want / दृढ़ता के साथ संघर्ष करना

55.The green - eyed monster - Used as a way of talking about jealousy / ईर्ष्यालु

56. Set the record straight - Give a correct account / सही ब्यौरा देना

57. Good samaritan - Helpful person / परोपकारी व्यक्ति

58. Bad blood - Angry feeling / संबंधों में खटास होना

59. To go to the whole hog - To do it completely / पूर्ण करना

60. Lay out - spend / खर्च करना

61. Laying off - Dismissal from jobs / अस्थायी तौर पर निकाल देना

62. By leaps and bounds - At rapid pace / दिन दूनी और रात चौगुनी

63. Spilling the beans - Revealing the information indiscreetly / राज उजागर करना

64. Carry out - Execute / आज्ञा का पालन करना

65. Went to the winds - Dissipated / To be utterly lost / लुप्त हो जाना

66. Ins and outs - Full details / सारा विवरण

67. A White elephant - A costly but useless possession / महँगा परंतु बेकार

68. Fed up - Annoyed / से परेशान होना

69. In the good books - In favour with / कृपापात्र होना

70. Sharp practices - Dishonest means / भ्रष्ट साधन

71. In high spirits - Full of hope and enthusiasm / आशा और उत्साह से भरा हुआ

72. Shake in shoes - Tremble with fear / डर से काँपना

73. Fits and starts - Not regularly / अनियमित

74. Close shave - Narrow escape / बाल - बाल बचना

75. Take with a grain of salt - To listen to something with considerable doubt / किसी बात को ध्यान से सुनना

76. Hobson's choice - No real choice at all / कोई विकल्प न होना

77. To eat a humble pie - To apologize / माफी माँगना

78. Ri give the devil his due - To give encouragement even to the enemy / दुश्मन को भी हौसला देना

79. Reading between the lines - Looking for meaning that are not actually expressed / छुपे हुए अर्थ को समझना

80. An open book - one that hold no secrets / जो कोई भी रहस्य नही रखता

81. An axe to grind - A Private interest to serve / स्वार्थ से भरा उद्देश्य

82. To blow from one, s own trumpet - praise one, s own abilities and achievements / अपना गुणगान करना

83. Stand - offish – Indifferent/ यह देखकर हैरान रह गया

84. Sowing wild oats - Irresponsible pleasure seeking in young age / युवावस्था की गलतियां करना

85. A bolt from the blue - Something unexpected and unpleasant / आकस्मिक विपत्ति

86. By leaps and bounds - Rapidly / दिन दुगनी और रात चौगुनी

87. Of no avail - useless / व्यर्थ

88. On the verge of - On the brink of /

89.A sore point - something which hurts / पीड़ा का कारण

90. Rise like a phoenix from the ashes - With a new/ life /rebirth / reincarnation / आपदा या विनाश के बाद नए सिरे से उभरना

91. To keep under wraps - Secret - गुप्त रखना

92. Die in harness - To die at one, work / अपनी कार्यविधि के दौरान ही मृत्यु होना

93.Fair - weather friend that deserts in difficulties / मुसीबत में साथ न देने वाला मित्र

94.Emerge out of thin air - Appear suddenly - अचानक प्रकट होना

95.cut no ice - Have no influence / कोई प्रभाव न डालना

96. Bring ro light - Introduce for discussion - चर्चा के लिए प्रस्तुत करना

97.Cannot hold a candle to - Cannot be compared to / निम्न स्तर का होना

98.Burn one's boat - Leave no means of return /

99.Make one's flesh creep - Horrify / डराना

100.Pros and cons - For and against / Analysis of all the given facts / पक्ष और विपक्ष

101. To take into account - To consider / विचार करना

102. Blow into - Pass off / शांत होना

103. Run into - Incurred / To experience difficulties / मुसीबत का सामना करना

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Dear Aspirants, here are the our results in differents exams (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न , 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न , 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न , 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNIc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjI4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

FREE SAMPLE

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 563+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
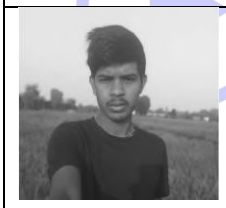	**Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati**	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.-Biramganj, Dis.-Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

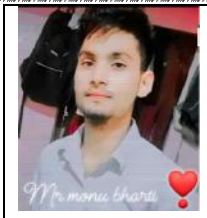	**MONU S/O KAMTA PRASAD**	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
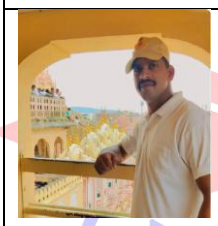	**Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel**	Rac batalian	729141135	Dis.- Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others.....

Click on the below link to purchase notes

WhatsApp करें - https://wa.link/bxnukg

Online Order करें - https://bit.ly/haryana-cet-notes

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE